



हिन्दू धर्म में बहुत महत्व रखता है खरमास

खरमास हिन्दू धर्म और ज्योतिष में बहुत महत्व रखता है, क्योंकि किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत करने से पहले शुभ समय या मुहूर्त जरूर देखा जाता है। साथ ही सूर्य के चाल भी देखते हैं, क्योंकि सूर्य जब धनु और मीन राशि में आते हैं तब खरमास लग जाता है। अतः शुभ कार्यों को करने की मनाही है। खरमास से संबंधित खास नियम, जिनका पालन करना है आवश्यक

- खरमास 16 दिसंबर से 14 जनवरी तक जारी रहेगा। अतः इस समय में सगाई, शादी, वधु प्रवेश, गृह प्रवेश, घर निर्माण, नया व्यापार का आरंभ तथा किसी भी तरह का कोई भी मांगलिक कार्य ना करें।
- खरमास में पूरे महीने में सूर्योदय से पहले उठकर स्नानादि करके प्रतिदिन चढ़ते सूरज को अर्घ्य अर्पित करें, यह सेहत, समृद्धि के लिए लाभदायी रहेगा और ऐसा करने से शुभ फल भी मिलेगा।
- इस महीने भगवान श्री कृष्ण के प्रसन्न करने के लिए गौशाला जाकर गौमाता को गुड़, हरा चना खिलाएं और उनका पूजन करें।
- यदि गौशाला जाना प्रतिदिन संभव ना हो तो घर में गाय की मूर्ति या तस्वीर लगाकर उसका पूजन करें।
- खरमास के महीने में आप जितने असहाय और गरीबों की मदद करेंगे उतना लाभ मिलेगा, क्योंकि खरमास ही एक ऐसा महीना है जिसमें दान और पुण्य करने का सबसे अधिक फल मिलता है।
- प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर श्री विष्णु का केसर मिले दूध से अभिषेक करें और कम से कम 11 बार विष्णु मंत्र- ‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः’ का तुलसी की माला से जाप करें।
- खरमास को मलमास भी कहा जाता है। इस माह आने वाली सभी एकादशियों का व्रत-उपवास करके भगवान श्री विष्णु का पूजन करें और उन्हें तुलसी के पत्तों के साथ खीर का भोग लगाएं।
- हिन्दू धर्म में इस महीने को शुभ भी माना जाता है। अतः हिन्दू धर्म के विशिष्ट व्यक्तिगत संस्कार भी निषेध हैं, जैसे नामकरण, यज्ञोपवीत, शुभ विवाह और कोई भी धार्मिक संस्कार नहीं करें।
- जिनकी कुंडली में सूर्य कमजोर स्थिति में हो उन्हें सूर्यदेव का पूजन, अर्घ्य, उपासना आदि इस माह अवश्य करना चाहिए।
- इस माहपर्यंत श्री विष्णु का पूजन करके तीर्थस्थान पर जाकर स्नान-दान करने का भी विशेष महत्व है।
- इस महीने नई वस्तुएं, नया घर, प्लॉट, घर अथवा कार या इलेक्ट्रॉनिक सामान की खरीदारी नहीं करनी चाहिए।
- नौकरी अथवा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए खरमास की नवमी तिथि को छोटी कन्याओं को भोजन करवाएं, यह पुण्य फलदायी कार्य होगा।
- इस माह में बुरे अथवा कुविचारों को त्यागें, बुरी आदतें और नशे की लत हो तो छोड़ दें, दुराचार आदि का भी त्याग करके धार्मिक कार्यों में मन लगाएं।
- इस महीने में प्रतिदिन सूर्यदेव की उपासना करके आदित्य हरचर्य स्तोत्र का पाठ करें।
- इस माह सायंकाल के समय सूर्यदेव की आराधना करने से जहां जीवनपर्यंत भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है, वहीं अन्न, जल आदि किसी भी वस्तु की जीवन में कमी नहीं रहती।
- यश-कीर्ति की चाह रखने वालों को, उत्तम स्वास्थ्य, शिक्षा, संतान और करियर में सफलता के लिए प्रतिदिन प्रातःकाल में उग रहे लाल सूर्यदेव को अर्घ्य दें।
- इस महीने अपने इष्टदेव की पूजा-अर्चना और सेवा करने तथा दान-पुण्य देने से पुण्य का संचय होता है।
- खरमास में पीपल वृक्ष का पूजन करना शुभ फलदायी माना जाता है, क्योंकि पीपल में भगवान श्री विष्णु का वास माना जाता है।



खरमास का आरंभ 16 दिसंबर से होगा और यह 15 जनवरी को मकर संक्राति पर समाप्त हो जाएगा। खरमास में शादी, विवाह, मुंडन और गृह प्रवेश जैसे सभी संस्कार नहीं होते हैं। खरमास मकर संक्राति के बाद समाप्त होता है और इसके समाप्त होते ही सभी शुभ कार्य फिर से आरंभ हो जाते हैं। आइए आपको बताते हैं इस बारे में विस्तार से। खरमास सूर्य जब धनु राशि में प्रवेश करते हैं, उस दिन से आरंभ होता है। खरमास इस साल 16 दिसंबर 2023 से शुरू होकर 15 जनवरी 2024 तक रहेगा। इस दौरान कोई भी धार्मिक कार्य नहीं किए जाते हैं। ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार सूर्य के धनु राशि में प्रवेश करने के साथ ही खरमास आरंभ हो जाता है और यह सूर्य के मकर राशि में आने पर समाप्त होता है। इस साल सूर्य 16 दिसंबर को धनु राशि में प्रवेश करेंगे। यानी कि इस दिन धनु संक्राति होगी। 15 जनवरी को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करेंगे और उसके बाद खरमास समाप्त होगा। सभी शुभ कार्य आरंभ हो जाएंगे। आइए आपको बताते हैं क्या है खरमास और क्या है इसको लेकर खास मान्यताएं।



गीता के 700 श्लोकों में है हर समस्या का समाधान

- श्रीमद्भगवद्गीता एक दिव्य ग्रंथ है। गीता मरना सिखाती है, जीवन को तो धन्य बनाती ही है। यह हमें पलायन से पुरुषार्थ की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है।
- श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दुओं के पवित्रतम ग्रंथों में से एक है।
- गीता केवल धर्म ग्रंथ ही नहीं यह एक

- अनुपम जीवन ग्रंथ है। जीवन उत्थान के लिए इसका स्वाध्याय हर व्यक्ति को करना चाहिए।
- श्रीमद्भगवद्गीता की पृष्ठभूमि महाभारत का युद्ध है।
- श्रीमद्भगवद्गीता के 18 अध्याय हैं और महाभारत का युद्ध भी 18 दिन ही चला था।



खरमास कब से लग रहा है, जानें खरमास के नियम और विधि विधान

खरमास में क्यों नहीं होते मांगलिक कार्य

ज्योतिष के जानकारों के अनुसार, सूर्य जब गुरु की राशि धनु और मीन में प्रवेश करते हैं तो वह अपने गुरु की सेवा में लग जाते हैं और उनका प्रभाव कम हो जाता है। यही वजह है कि इस वक़्त कोई भी शुभ कार्य नहीं होता है। यह भी माना जाता है कि खरमास के दौरान गुरु का बल भी कमजोर हो जाता है और शुभ कार्य के वक़्त सूर्य और गुरु दोनों का ही शुभ स्थिति में होना जरूरी है इस वजह से खरमास में कोई शुभ कार्य नहीं किया जाता है।

खरमास में क्या न करें

खरमास के दौरान विवाह, सगाई या फिर

शादी से जुड़ा कोई भी कार्य करना मना होता है। कहा जाता है कि खरमास में शादी या सगाई करने वाले दंपतियों को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है और उन्हें वैवाहिक सुख नहीं मिलता है। खरमास में नए घर में प्रवेश भी नहीं किया जाता है। ऐसा करने से दोष लगता है और घर में रहने वाले लोगों का जीवन तनाव में कटता है। खरमास में किसी प्रकार के नए व्यापार का आरंभ भी नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से सफलता के रास्ते में बाधा आती है और आपको नए कार्य में काफी संघर्ष करना पड़ता है। खरमास में मुंडन, जनेऊ या फिर कोई अन्य संस्कार करना भी अच्छा नहीं माना जाता है। खरमास में व्यक्ति को ध्यान लगाकर भगवान की पूजा करनी चाहिए और सुख समृद्धि के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

गीता कहती है कि जीवन रोने के लिए नहीं, भाग जाने के लिए नहीं है, हंसने और खेलने के लिए है। यह हमें संकटों से, हिम्मत से लड़ने की प्रेरणा देती है। गीता मानव मात्र को जीवन में प्रतिक्षण आने वाले छोटे-बड़े संग्रामों के सामने हिम्मत से खड़े रहने की शक्ति देती है। श्रीमद्भगवद्गीता ज्ञान का अद्भुत भंडार है। हम हर काम में तुरंत नतीजा चाहते हैं लेकिन भगवान ने कहा है कि धैर्य के बिना अज्ञान, दुख, मोह, क्रोध, काम और लोभ से निवृत्ति नहीं मिलेगी। आइए जानें खास बातें.

- अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था।
- गीता में कर्तव्य को ही धर्म कहा है। भगवान कहते हैं कि अपने कर्तव्य को पूरा करने में कभी भी लाभ-हानि का विचार नहीं करना चाहिए।
- गीता के 700 श्लोकों में हर उस समस्या का समाधान है, जो हर इंसान के सामने कभी न कभी आती हैं।
- गीता एकमात्र ऐसा ग्रंथ है, जिसकी जयंती मनाई जाती है।
- भगवान ने अर्जुन को निमित्त बनाकर, गीता के ज्ञान द्वारा विश्व के मानव को पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी है।

खरमास में करें सूर्य देव की उपासना

क्यों खरमास में मंगल कार्यों (शादी-विवाह, मुंडन, जनेऊ संस्कार, नूतन गृह प्रवेश इत्यादि) को करना उत्तम नहीं बताया गया है। गुरु का ध्यान सूर्य देव पर रहता है। खरमास में धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं, किंतु मंगल शहनाई नहीं बजती। खरमास 15 जनवरी की रात तक रहेगा। काशी पंचांग के अनुसार सूर्य जब गुरु की राशि धनु या मीन में विराजमान रहते हैं, तो उस घड़ी को खरमास माना जाता है और खरमास में मांगलिक कार्य वर्जित माने गए हैं। खरमास की इस अवधि में जनेऊ संस्कार, मुंडन संस्कार, नव गृह प्रवेश, विवाह आदि नहीं करना चाहिए। इसे शुभ नहीं माना गया है, वहीं विवाह आदि शुभ संस्कारों में गुरु एवं शुक्र की उपस्थिति आवश्यक बताई गई है। ये सुख और समृद्धि के कारक माने गए हैं। खरमास में धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं, किंतु मंगल शहनाई नहीं बजती। इस माह में सभी राशि वालों को सूर्य देव की उपासना अवश्य करनी चाहिए।

गुरु का ध्यान सूर्य देव पर

इसका एक धार्मिक पक्ष यह भी माना जाता है कि सूर्य देव जब बृहस्पति के घर में प्रवेश करते हैं, तो देव गुरु का ध्यान एवं संपूर्ण समर्पण उन पर ही केंद्रित हो जाता है। इससे मांगलिक कार्यों पर उनका प्रभाव सूक्ष्म ही रह जाता है जिससे कि इस दौरान शुभ कार्यों का विशेष लाभ नहीं होता इसलिए भी खरमास में मंगल कार्यों को करना उत्तम नहीं बताया गया है।



व्यक्ति को रंक से राजा बना सकता है नीलम

ज्योतिष मान्यताओं के अनुसार नीलम रत्न व्यक्ति को रंक से राजा बना सकता है। यह रत्न शनिदेव को समर्पित होता है। इस रत्न को हर कोई धारण नहीं कर सकता है। जहां ये रत्न रंक से राजा बना देता है वहीं अशुभ होने पर ये रत्न राजा को भी रंक बना सकता है। ज्योतिष गणनाओं के अनुसार नीलम रत्न को धारण करने से पहले कुंडली का विचार करना जरूरी होता है। .

नीलम रत्न के फायदे

- जिन लोगों के लिए नीलम शुभ होता है उन्हें इसका तुरंत फायदा दिखने लगता है।
- स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।
- धन- लाभ होने लगता है।
- नौकरी और व्यापार में तरक्की होने लगती है।
- शानि की वकी चाल से इन राशियों को हो रहा है फायदा, जानें क्या आप भी हैं इस लिस्ट में शामिल

नीलम रत्न के अशुभ होने पर इन समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है

- नीलम हर किसी को शुभ फल नहीं देता है। जिन लोगों के लिए ये शुभ नहीं है, उन्हें स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।
- धन- हानि हो सकती है।
- कोई बड़ी दुर्घटना हो सकती है।

ऐसे करें पहचान नीलम आपके लिए शुभ है या नहीं

नीलम रत्न को धारण करने से पहले उसको तकीया के नीचे रखकर सोएं। अगर आपको रात में कोई भी बुरा स्वप्न नहीं आता है और अच्छी गहरी नींद आती है तो इसका मतलब है ये रत्न आपके लिए शुभ है। अगर आपको अच्छी और गहरी नींद नहीं आती है तो इस रत्न को धारण न करें। रत्न धारण करने के बाद अशुभ घटना होने पर इस रत्न को तुरंत उतार दें।

नकारात्मकता दूर कर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं मिट्टी के बर्तन

प्राचीन काल से ही मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल होता आ रहा है। हालांकि वर्तमान समय में मिट्टी के बर्तनों की जगह प्लास्टिक या अन्य धातु से बने बर्तनों ने ले ली है। लेकिन आज भी सजावट के लिए ज्यादातर लोग मिट्टी से बनी चीजों का प्रयोग करते हैं। वास्तु शास्त्र के अनुसार, मिट्टी के बर्तन व्यक्ति की बंद किस्मत को जगा सकते हैं। विद्वानों के अनुसार, घर पर मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल शुभ माना जाता है। कहते हैं कि ऐसा करने से नकारात्मकता दूर होती है और घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। जानिए वास्तु में किन तीन मिट्टी की चीजों को घर पर रखना शुभ माना जाता है।

मिट्टी का घड़ा

वास्तु के अनुसार, मिट्टी का घड़ा रखने से सुख-समृद्धि घर आती है। मिट्टी का घड़ा सदैव उत्तर दिशा की ओर रखना चाहिए। इसके साथ ही घड़े को कभी खाली नहीं छोड़ना चाहिए। मान्यता है कि घर पर मिट्टी का घड़ा रखने से सुख-समृद्धि का वास होता है। आपको बता दें कि आज भी आयुर्वेदाचार्य मिट्टी के घड़े का पानी सेहतमंद बताते हैं।

मिट्टी का प्रतिमाएं

वास्तु शास्त्र के मुताबिक, पूजा स्थल पर मिट्टी से बनी देवी-देवताओं की प्रतिमाएं रखना शुभ हता है। इसलिए घर के मंदिर में हमेशा मिट्टी से बनी देवी-देवताओं की मूर्ति रखनी चाहिए। इन प्रतिमाओं को हमेशा घर के ईशान कोण (उत्तर-पूर्व दिशा) या दक्षिण-पश्चिम दिशा में ही रखना चाहिए। मान्यता है कि ऐसा करने से मां लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

मिट्टी का दीपक

वर्तमान समय में पूजा स्थल पर मिट्टी के दीपक का बहुत कम लोग इस्तेमाल करते हैं। मिट्टी के दीपक की जगह धातु से बने दीपक का इस्तेमाल होता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, मिट्टी से बने दीपक को घर पर जलाना शुभ होता है। कहते हैं कि ऐसा करने से घर पर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।



